स्वयंसेवक बंधुओंको

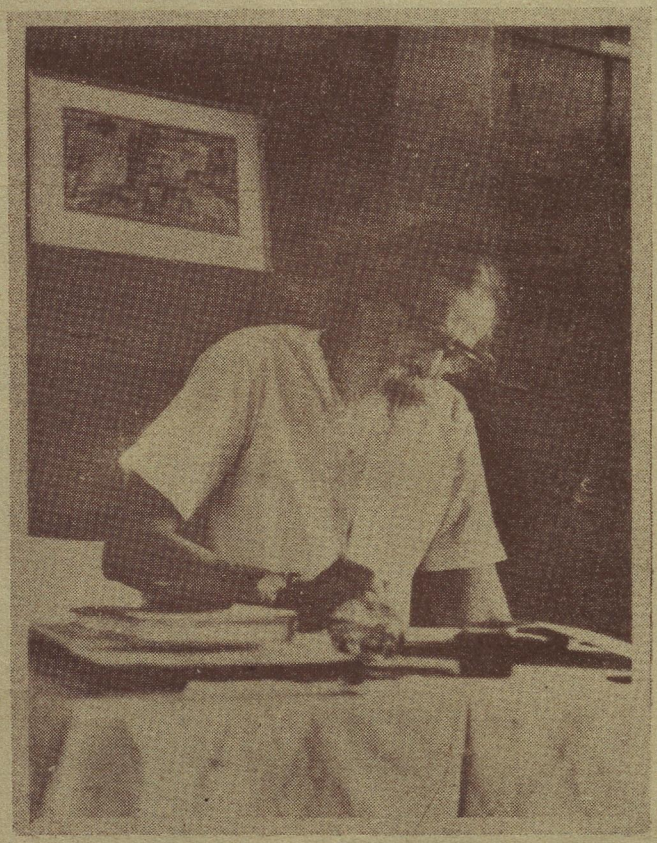

दि. २-४-७३
डॉ. हेडगेवार भवन,
महाल, नागपूर.

माधव सदाशिव गोळवलकर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, केंद्र-नागपुर

सरसंघचालक : मा. स. गोळवलकर सरकार्यवाह : म. द. देवरस

दूरभाष : ४२९०६
पत्रव्यवहारका पता
मा. स. गोळवलकर
डा. हेडगेवार भवन
नागपुर २

पत्र क्र. .... दिनांक .... तिथि ....

2-4-73 1

सर्व स्वयंसेवक बंधुओं को —

गत कुछ मास से शरीर का स्वास्थ्य दुर्बलतर हो रहा है। डॉक्टर बंधु निराश हो गये हैं। उनके मन में एक ही विचार आता प्रतीत होता है कि यह शरीर अब अल्पकाल का साथी है।

अब अपने संघकार्य की व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण प्रश्न सामने आता है। संघकार्य अपने संविधान के अनुसार सुचारु रूप से चलेगा ही। उसी संविधान के अनुसार नूतन सरसंघचालक की योजना करने का यह प्रश्न है। अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल के जिन सदस्यों से मैं मिलकर विचार कर सका वे सब पुराने, दीर्घकाल के अनुभवी मंजे हुए कार्यकर्ता हैं और भिन्न भिन्न प्रान्तों के संघचालक पद पर संघकार्य में संलग्न हैं। सबसे बात होने पर उनका सानुकूल निर्णय प्रकट करना मेरा तत्कालीन सरसंघचालक के नाते कर्तव्य है।

उस दायित्व को पूरा करते हुए मैं यह निर्णय प्रकट कर रहा हूँ कि मेरे शरीर के शान्त होने के पश्चात् सरसंघचालक पद का भार सब को परिचित श्री मधुकर दत्तात्रेय उपाख्य बालासाहेब देवरस ग्रहण करेंगे।

अपने कार्य की स्नेहपूर्ण स्वभाव की पद्धति, आत्मनिरपेक्षता, ध्येयनिष्ठा आदि विशेषताओं को ध्यान में रखकर सब छोटे बड़े स्वयंसेवक बंधु अपने परमपूज्य श्री सरसंघचालक जी के मार्गदर्शन में संघकार्य की पूर्ति हेतु कायावाचामनसा जुटे रहेंगे और कार्य शीघ्र लक्ष्यपूर्ति कर सकेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

सब बंधुओं को सादर नमस्कार। इति शम् —

मा. स. गोळवलकर

॥ ॐ ॥

॥ श्रीः ॥

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, केंद्र-नागपुर

सरसंघचालक : **मा. स. गोळवलकर** सरकार्यवाह : **म. द. देवरस**

दूरभाष : ४२९०६
पत्रव्यवहारका पता
मा. स. गोळवलकर
डा. हेडगेवार भवन
नागपुर २

पत्र क्र. .... दिनांक 2-8-73 तिथि ....

अपना कार्य राष्ट्र पूजन है, ध्येय पूजन है — व्यक्ति पूजन को उसमें स्थान नहीं है। मेरा शरीर अल्पकाल तक का साथी रहा है ऐसा डॉक्टर बंधुओं का अनुमान प्रतीत होता है। शरीर नश्वर तो है ही, कभी न कभी जायेगा। उसके जाने पर शव का श्रृंगार आदि बातें की ही न जानी हैं। वैदिक संस्कार दहन और उसके पश्चात् [illegible] करने वाले संस्कारों के इसके अतिरिक्त और किसी व्यक्ति का व्यक्तिगत स्मारकों से महत्व बढ़ाकर उसके स्मारक बनाना आवश्यक नहीं है।

मैंने तो श्री शिवकरणजी से अपना स्वतः का श्राद्ध कर रखा है जिससे बाद में किसी पर श्राद्धादि का बोझ न रहे।

मैं अति थोड़े में कहता हूँ। इसका विचार जो अर्थ [illegible] सबको [illegible] है। इति ——

मा. स. गोळवलकर

॥ श्रीः ॥

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, केंद्र-नागपुर

सरसंघचालक : मा. स. गोळवलकर सरकार्यवाह : म. द. देवरस

दूरभाष : ४२९०६
पत्रव्यवहारका पता
मा. स. गोळवलकर
डा. हेडगेवार भवन
नागपुर २

पत्र क्र. .... दिनांक २-४-७३ तिथि ....

३

परमप्रिय, आदरणीय स्वयंसेवकबंधुगण —

२१ जून १९४० को परमपूजनीय डॉ. हेडगेवारजी का देहान्त होनेपर और उनकी इच्छाके अनुसार सरसंघचालक पदका गुरुभार मेरे ऊपर आया। मैं तो कुछभी जाननेवाला नहीं था। तो भी सब पुराने कार्यकर्ताओं ने बड़े प्रेमसे सहकार्य किया मार्गदर्शन किया और इतने दीर्घकालतक लगभग ३३ वर्ष मैं इस भारको सम्हाल पाया। अब आपकी भी इच्छा दिखती है कि इसी योग्य व्यक्ति को यह दायित्व देकर कार्य अधिक अच्छी प्रकार और अधिक कुशलता से पूर्ण करें और बढ़ावें। और अब यह योजना करनी है।

इस दीर्घकालमें मेरे स्वभावकी त्रुटियोंके कारण या अन्यान्य न्यूनताओंके, दोषोंके कारण अपने अनेक कार्यकर्ताओंको मनको दुःख हुआ होगा। मैं सबसे बद्ध हस्त क्षमायाचना करता हूं। अन्तमें श्री संत तुकाराम जीका वचन उद्धृत करता हूं जिससे सबका भाव ध्यानमें आ सकेंगे। —

शेवटची विनवणी। संतजनीं परिसावी॥
विसर तो नसावा। माझा देवा तुम्हांसी॥
आतां फार बोलों काई। अवघें पायीं विदित॥
तुका म्हणे पडतो पायां। करा छाया कृपेची॥ —॥

मा. स. गोळवलकर

शेवटची विनवणी ।
संतजनी परिसावी ।।
विसर तो न पडावा ।
मांझा देवा तुम्हासी ।।

आता फार बोलों कायी।
अवघे पायीं विदित ।।
तुका म्हणे पडतो पाया ।
करा छाया कृपेची ।।

अंतिम ये प्रार्थना ।
संतजन सुनें सभी ।।
विस्मरण न हो मेरा ।
आपको प्रभो कभी ।।

अधिक और क्या कहूँ ।
विदित सभी श्रीचरणोंको ।।
तुका कहे पैरों पड़ूं ।
करें कृपा की छाँह को ।।

प्रकाशक का निवेदन

प. पू गुरुजी द्वारा अपनी मृत्यु के दो मास पूर्व लिखे हुये अन्तिम तीन पत्र साथ में हैं। दि. ६ जून को सायंकाल प. पू. श्री. गुरुजी की डा. हेडगेवार भवन से अन्त्य यात्रा प्रारम्भ होने के पूर्व प्रथम पत्र महाराष्ट्र प्रदेश संघचालक मा. ब. ना. उपाख्य बाबाराव भिडे तथा तीसरा पत्र प. पू. सरसंघचालक मा. बाळासाहेब देवरस द्वारा सबके सामने पढ़कर सुनाया गया था। पत्र सुनते समय उपस्थित सहस्रों नागरिकों की आंखों से आंसुओं की धारा उमड़ पड़ी थी। ये पत्र अपने संग्रह में हों ऐसी अनेक बंधुओं की इच्छा होना स्वाभाविक है। अतः उनका प्रकाशन प. पू. गुरुजी के मूल हस्तलिखित प्रतिलिपियों के रूप में कर रहे हैं।

प्रकाशक :– श्री. क. रा. रंगनाथराव, रा. स्व. संघ, प्रकाशन विभाग,
डॉ. हेडगेवार भवन, नागपूर–२.

मुद्रक :– मधुकर आर्टस्, धंतोली, नागपूर